GAP भाषा
A MULTILINGUAL JOURNAL OF RESEARCH
(ISSN – 2582-8770)
Globally peer-reviewed and open access journal.

"आदिवासी उपन्यासों में स्त्री की स्थिति"

पंजाबी रेखाबेन सतिशकुमार

गुजरात केन्द्रीय विश्व विद्यालय
गांधीनगर
CUG/2013/0731

आदिवासी समाज में स्त्री का स्थान भारतीय मुख्यधारा से भिन्न रहा है। हिन्दू वर्ण व्यवस्था में सामाजिक और आर्थिक दृष्टि से पुरूष सर्वोपरि और श्रेष्ठ माना गया है, जिससे एक सवर्ण जाति की स्त्री पूर्णत: पति की आय पर निर्भर , परतंत्र दासी और अबला होकर अपना जीवन व्यतीत करती है। इसके विपरित आदिवासी समुदायों में स्त्री पुरूष के हर कदम पर साथ होती है। आदिवासी स्त्री आर्थिक रूप से स्वांवलम्बी व सामाजिक दृष्टि से स्वतंत्र होती है। आर्थिक स्वाधीनता-मातृसत्तात्मक परिवारों में अधिक होती है। संपूर्ण संपति की वारिस छोटी लड़की कहलाती है। वधु मूल्य के रूप में लड़की वालों को धन प्राप्त होता है। इस प्रकार आदिवासी लड़की जन्म से लेकर मृत्युपर्य तक पुरूष की सामंती मनोवृत्ति से युक्त होती है। आर्थिक रूप में स्वाधीन आदिवासी औरत न तो पुरूष की मनक का शिकार होती है और न ही उसके पैरों की जूती बनकर रहती है। सामाजिक रूप में स्वाधीन आदिवासी औरत गरीबी विषमता से कठिन परिस्थितियों में हाड़ तोड़ श्रम करती है। इस संदर्भ में स्वातन्त्रोत्तर हिन्दी उपन्यासों साहित्य में स्त्री-पुरूष संबंधो का कई आयनों में चित्रांकन हुआ है।

1. पति-पत्नी का सहयोग:-

आदिवासी समुदायों में वैवाहिक जीवन सरस एवं प्रेममय बनाये रखने के लिए (कुवोद) सह प्रसविता प्रथा का प्रचलन है। खासी, टोड़ा, हो और औरांव समुदायों में पति को पत्नी की प्रसव पीड़ा का नाटक करना पड़ता है। मानव शास्त्रियों का विश्वास है कि इस प्रकार की प्रकिया से पति-पत्नी संबंधों में प्रगाढ़ता आती है।

सह प्रसविता के समान ही कष्टों और बीमारी के समय 'सागर लहरे और मनुष्य' का क्रूर माणिक अपनी पत्नी के अस्पताल से लौंटने के बाद उसके साथ सहयोग पूर्ण व्यवहार करता है।"....कमज़ोरी की हालात में दुर्गा को वह कोई काम न करने देता। सुबह-शाम उसे समुद्र किनारे घुमाता। कभी-कभी बम्बई सैर को ले जाता है। नये-नये सुन्दर फूलों की माला, देवी के फूल, गज़रो से रात को उसे सजाकर सुलाता"।[1] अपनी पत्नी से अनैतिक व अवैध संबंधों को नज़र अंदाज करता हुआ 'कब तक पुकारूं' का सुखराम बाप का पत्नी से प्रेम इस बात का प्रमाण है। "जब वह शराब पीकर पराये मर्दो के साथ मस्त होकर बकती थी, तब वह उसे कंधो पर घरकर ले आता था"।[2] सुखराम भी प्यारी से अतूट और निष्पाप प्रेम करता है। "वह रखैल होकर दूसरे के घर रहने लगती है, पर वह फिर भी उसकी बीमारी का इलाज करके स्वस्थ होने में पूरा सहयोग देता है"।[3] 'नदी के मोड़' का पुरूष पात्र नरसू अपनी पत्नी अमली से अवैध संबंधों को अपनी शक्तिहीनता के चलते बर्दास्त करता है और जब वह मनकू के साथ जाती है तो वह बोलता है "घ्यान रखना। कोई दुख मत होने देना।"[4] अपनी भौतिक ही नहीं मानसिक कष्ट से बचाना और उसके पापों को देखते हुए भी माफ करना और जब वह दूसरे को पति मानकर चली जाये तब भी उसके सुख की कामना करना सह प्रसविता का ही दूसरा रूप है।

2. वैवाहिक जीवन में कामपरक समस्याएँ:-

आदिवासी स्त्री पुरूष संबंधो में यौन संबंध बाहरी लोगों के आकर्षण और जिज्ञासा का केन्द्र रहा है, कई तरह के मिथ और कल्पनाएँ गढ़ ली गई है। ,सभ्य लोगों की आमघारणा है कि आदिवासी "विवाह के पूर्व और पश्चात एक स्त्री को यौन

https://www.gapbhasha.org/

संबंध के सिलसिले में काफी छूट होती है। कई एक पतियों के अतिरिक्त उनके कई एक चाहनेवाले भी हो सकते है। फिर कुछ पुरोहित के साथ भी उनका यौन संबंध करना आवश्यक हो सकता है।"[5] यौन संबंधों में कुछ ढीलेपन को स्वच्छंद अथवा स्वतंत्र यौन मान लिया गया और 'यौन साम्यवाद' जैसे मुहावरे प्रयोग किये गये। वास्तविकता यह है कि संसार के किसी भाग से संग्रहित नृजातीय आंकड़े इस परिकल्पना का समर्थन नहीं करते। एक विवाहित आदिवासी स्त्री अपने पति के प्रति वफादार होती है। गौड़ लोगों का जब "उसकी पत्नी का कोई प्रेमी वास्तव में मिल जाता है तो ऐसी स्थिति में प्रेमी और पत्नी की हत्या हो जाती है"।[6] प्राय: विवाहपरांत "भील महिला पति परायणा एवं सदाचारिणी होती है और कुदृष्टि डालने वाले पर पुरूष को भयावह दण्ड का भागी बनना पड़ता है।"[7] फायड़ के अनुसार कामेच्छा मनुष्य की शक्तिशाली आधारभूत मूल प्रवृति है, जो समान रूप से आम लोगों की भांति आदिवासी समाज में भी देखी जा सकती है।

कामजनित इच्छा का प्रादुर्भाव 'नदी के मोड़ पर' में मनोवैज्ञानिक रूप से हुआ है, तो 'कब तक पुकारू और शैलूष' में नट जाति की आर्थिक व सामाजिक विसंगति जिम्मेदार है। "नदी के मोड़ पर" के नरलू और अमली को यौन संबंध में जो परिवर्तन दिखायी देता है उसके पीछे दुर्घटना जिम्मेदार है, लेकिन दुर्घटना के बाद एक तो पति का प्रवेश होता है। जो आदिवासी स्त्री स्वतंत्रता व यौन संबंधो में स्त्री की अपनी आजादी है। एक दिन नरलू महाजन की इमारत पर इंटे देते-देते दुर्घटना ग्रस्त हो जाता है। एक दिन अमली पाती है - उसकी जांघो के बीच एक नाजुक सी चीज बेकार हो चुकी है। "कितना बुरा दिन था वह। हाय, मेरा सब कुछ चला गया। इतना दुख मुझे उस दिन भी नहीं हुआ बिरजू जिस दिन मेरे माँ-बाप मरे थे"।[8] नरसू अपनी मज़बूरी को अपनी पत्नी पर नहीं थोंपना चाहता। वह अपनी पीड़ा व कष्ट से पत्नी को अवगत कराता है। अमली भावना में बहकर आश्वासन दिलाती है .."उसकी भी तू चिंता मत करे। तेरे शरीर से चिपट-चिपट कर गरम हो लूंगी समझा।"[9] स्त्री की स्वाभाविक कामेच्छा अमली कबतक नपुंसक पति के सहारे दबा सकती है। "झांड-फूंक के बहाने मनकू ओझा की झोपड़ी में आकर पीपलवाली डाकिनो को उतारते-उतारते तीन चार महीनें में अमली में हमल रह जाता है।"[10] नरसू अपनी पुरूषत्वहीनता के चलते पत्नी की स्त्री जन्य कामेच्छा को परायें पुरूष से तृप्त देखकर उत्तेजित एवं परेशान नहीं होता। अपितु उदारवादी नजरिये से देखता है। "यदि अमली रात को मेरा बिस्तर छोड़कर मनकू के पास चली जाये तो उसमें कौन सा पहाड़ टूट पड़ा। मैं जानता था अमली कुछ भी करे, लेकिन वह गंगामैया की तरह पवित्र है।"[11] "कब तक पुकारू का नट सुखराम अपनी पत्नी प्यारी के विरूद्घ कहता है, तब भी प्यारी उसके मन में स्थान पायें हुए है।"[12] भील नरसू की परिस्थिति और नटों के भिन्न नैतिक मापदण्डों का चरित्रण उनकी आर्थिक परिस्थितियों के अनुरूप है।

सागर लहरें और मनुष्य की बंशी निड़र और साहसी है, वह अपनी उद्दाम कामवासना को शांत करने के लिए विवाहेतर संबंध अपने नौकर से जोड़ती है। जब उसे पता चलता है कि जागला शादी करना चाहता है तो " बंशी ने दस-दस रुपये के दो नोट देते हुए जागला से कहा-जागला, क्या तुम अब भी शादी करेगा? हमारा पास रे। एक बिट्ठल और दूसरा तू।"[13] पति की आड़ में वह जागला से यौन तृप्ति करना चाहती है। इसलिए जागला डरता था कि "बंशी सहकुछ सह सकती है, यह नहीं सह सकती कि जागला किसी औरत के पास जाये।"[14] जब शादी करके जागला अपना घर बसाना चाहता है तो बंशी कहती है "हमारे घर में मच्छी खाकर दूसरा के घर में रहने का बात हम नहीं जानताय, अइसा नहीं होयेगा"।[15] क्योंकि पीछले दस बारह साल से जागला उसके साथ था। वह उसका नौकर ही नहीं उसका प्रेमी भी था। वासना के स्थान पर प्रेम भी प्रबल हो गया था फिर जागला घर का कार्य भी करता था। सोमा की विकृत भावना यशंवत को देखकर प्रबल हो जाती है। जबकि उसके घर में भी वैसा ही जवान नौकर है-"आज यशंवत को देखकर उसके मन में एक प्यास जाग उठी। उसका सुंगठित शरीर, उसकी आलिंगन में कस लेनेवाली मछलीदार भुजाएँ, स्त्री को पी जाने वाली बड़ी-बड़ी आंखे, चिंरतन शांति देने वाली चौड़ी और विशाल छाती देखकर सोमा भीतर ही भीतर गम गयी हो उठी।"[16] यहाँ नैतिकता में बंधे विचारों तक ही सीमित अतृप्त मनोवृत्ति है। यहीं यौन विकृति दुर्गा की माँ में भी परिलक्षित होती है। बीमार दुर्गा की देखभाल के लिए उसकी मां गूंगी देर रात तक उसके घर ठहरती है। एक दुर्गा की जो आंख खुली तो देखा कि बिलकुल अंधेरा है और माँ दरवाजा खोलकर बाहर जा रही है। दुर्गा को लगा जैसे सारी छत उसके उपर आ गिरी है।

आदिवासी समाज में यौन विवाहेत्तर संबंध आम बात है लेकिन 'मुखयधारा' में व्याप्त नगरीय यौन कुण्ठा से आदिवासी मुक्त है। भील और गौड़ समुदायों में कुछ लोग विवाहेत्तर संबंधों को अपमानजनक समझते है तो कुछ स्वभावत: लचीला

https://www.gapbhasha.org/

व्यवहार अपनाते है। नट जैसी जनजातियाँ जिनका शरीर बेचना पेशा रह है पर सुखराम और सावित्री जैसे विशिष्ट पात्र पेशा करने का विरोध करते है। यौन-कुण्ठा से मुक्त आदिवासी नगरीय जीवन के संपर्क में आ रहा है, जिससे सागर लहरें और मनुष्य के मछुआरें में शिक्षित रत्ना पर यह प्रभाव देखा जा सकता है।

काम-कुण्ठा सांस्कृतिक संक्रमण एवं नगरीयकरण से प्रभावित 'सागर लहरे और मनुष्य' में बेमेल वैवाहिक संबंध दांम्पत्य जीवन को विखंडित करके संपूर्ण जीवन क्रम को कामजन्य-कुण्ठा प्रभावित व विश्रखंलित कर देती है। रत्ना बम्बई नगर की बाहरी तड़क-भड़क से प्रभावित होती है। वह भौतिक वैभव विलास को पाने के लिए अधिक उम्र के माणिक से शादी कर लेती है। लेकिन उसके दांम्पत्य जीवन को पहला झटका तब लगता है जब उसके सपने महानगरीय गगन चुम्बी अट्ठालिकाओं से उड़ते एक अंधेरी कोठरी में आकर बिखर जाते है। उसकी मृग तृष्णा का भ्रम तूट जाता है। शायद जवान रत्ना इसे भी सह जाती पर दूसरा घक्का माणिक के शक्तिहीन व कमजोर शरीर से लगता है। "जिस पृष्ठ अंग को वह अंक से भर लेना चाहती थी उसकी जगह निर्बल और सांसों से बोझिल हड्डियाँ का ढ़ाचा उसे मिला।"[17] बम्बई की तड़क-भड़क से उसका प्यासा मन और भी प्यासा हो उठता है। अंग्रेजी उपन्यासों को पढ़कर उसकी शारिरीक भूख और भी तीव्र हो जाती है। अतृप्ति में यशंवत उचक्कर उसके मन में झांकने लगता है, पर वह नैतिकता के बंधन में माणिक की होकर हर रात रत्ना से बचना चाहता है। "उसे अपनी कमजोरी मालूम होती और जैसे उसके शरीर की सामथ्यँ, रीति उतेजना में उसके सामने हीन है। अपने को हीन पाने की भावना ने जैसे उसे विवश कर दिया था।"[18] रत्ना का अतृप्त मन असंतुष्ट कामेच्छा होटल के ग्राहको को अपनी तरफ देखकर "उसका असंतोषी मन इस बहाने एक प्रकार की तृप्ति ढूढता। किसी ग्राहक को देखकर वह भी ललचा उठती।"[19] माणिक घर्म, नैतिकता और दांम्पत्यजीवन का हवाला देकर रत्ना को बांघने की कोशिश करता। "सब कमजोरियों के साथ भी मैं तेरा हूँ। मेरे इस समर्पण में शरीर ही नहीं, मेरी आत्मा, मेरा सबकुछ तेरे लिए है।"[20] रत्ना माणिक की शंका उसके व्यवसाय से पत्नी को साघन बनाने की स्वार्थी व अनैतिक चाहत को देखकर वह माणिक को मार-पीटकर त्याग देती है। सागर लहरे और मनुष्य के दो पात्र माणिक और रत्ना सांस्कृतिक संक्रमण के प्रतिरूप है, जो स्त्री-पुरूष संबंधों में नगरीय सांस्कृतिक विसंगति व त्रासदी के शिकार होते है।

3. विधवा – विवाह:-

हिन्दू समाज के विपरीत आदिवासी समुदायों में विघवा स्त्री को पुन:विवाह करने की सामाजिक परम्परा विद्यमान है। एक आदिवासी स्त्री देवर का चुनाव कर लेती है। हालांकि ऐसी बाघ्यता नहीं है, वह अपनी पसंद के व्यकित के साथ विवाह करने के लिए स्वतंत्र है। परपरांनुसार नये पति को वधु मूल्य पूर्व पति के घर के लोगों को लोटाना पड़ता है। एक अघेड भील विघुर का दांयित्व बनता है कि वह समान उम्र की विधवा या परित्यकता से पुन:शादी करे। वृद्घ विधवा भी इस रिवाज व मान्यता के तहत जीवन साथी पाने की हकदार बन जाती है। यह आदिम समाज की कल्याण कारी एवं उद्धारक परंपरा है।

'जंगल के फूल' का हिरमी की दूसरी पत्नी की एक युवक द्वारा हत्या हो जाती है। उसके छोटे-छोटे बच्चे होते है। ऐसे समय में गंगी हिरमी के सामने बच्चों को पालने का प्रस्ताव रखती है, तब हिरमी ने देखा "गंगी के मासूम चहेरे में प्यार की अनगिनत धाराएँ बह रही है। वह जैसे उसके सामने खड़ी होकर प्यार की भीख मांग रही है"। [21] दोनों पुन:जीवन साथी बन जाते है। जब पहली पत्नी के आठ-दस बरस बाद भी दूसरा बच्चा नहीं हुआ तो वह एक जवान विधवा को घर में रख लेता है। पूर्व पत्नी यह समझकर स्वीकृति देती है कि " भला आदमी को कौन रोक सकता है। औरत की जात तो वह कच्ची माटी की हंडी है। जिसे जो निशान उस पर बनाना हो बनाये। मुंदरी जानती थी कि दुनिया में कोई औरत बिना मर्द के नहीं रह सकती। मर्द उसका सहारा है, वैसा ही जैसे बैल के लिए झाड होता है। मरद शिशम का पेंड़ है और औरत उसकी अमर बेला है।"[22] स्त्री की पराधीनता पुरूष पर आश्रित औरत का स्वर है, यहाँ ऐसा लगता है आदिवासी औरत की नहीं सभ्य समाज की औरत की निर्भरता हो। बिना किसी प्रथा या रीति के हिरमे दोनों बार विवाह के नाम पर औरतें बैठा लेता है।

'कब तक पुकारू' की विधवा सोनो नट परम्परा को हवाला देकर किसी पुरूष के यहां बैठने की बात कहती है। कुरीं की

https://www.gapbhasha.org/

परित्यकता कजरी सुखराम को पंसद करके उसे दूसरे पति के रूप में चुन लेती है और कुरीं पुन विवाह करता है जिसकी रस्म निभायी जाति है। "गीत शुरू हो गये। नटों का बुड्ढा पुरोहित आया। उसने हम लोगों का ब्याह कर दिया। गोस्त की गंध न्यापी गई। नाच चलते रहे। शराब कुल्हड़ो में उड़ेली जाने लगी"।[23] नट विधवा विवाह रीति क्रुक के अनुसार "जब मुखिया शादी की स्वीकृति प्रदान कर देता है तब भावी पति सिलवर के गहने , नथ और चुड़ियां लेकर विधवा के घर जाता है। उसके मित्र जोड़े को एक घर में कुछ देर के लिए अकेला छोड़ देते है"।[24]

'नदी के मोड़ पर' की अमली तीसरे पुरूष को अपनाती है। "अमली मनकू के साथ नहीं रहती। उसने दूसरा मर्द कर लिया है, उसका नाम का भद्दू सिंह"।[25] इस सपाट बयानी के साथ पुन विवाह सम्पन्न होता है। आदिवासी पंचायत के एक फैसले से नरसू की औरत मनकू की हो जाती है। "मनकू तुम्हें यह सजा दी जाती है कि अमली तुम्हारे साथ रहेगीं और तुम अमली को तुम्हारे साथ लेकर चौबीस घंटों में यह गांव छोड़ दो।"[26] यहां पंचायत के अज्ञान एवं अंधविश्वास पूर्ण फैंसले की विसंगति स्पष्ट हो जाती है। ऐसे संदर्भ कम ही बन पड़े है। कहा जा सकता है कि आदिवासी स्त्री-पुरूष संबंध विच्छेद और विधवा विवाह से संबंधित रीतियां व प्रथाएं उपन्यास में स्थान न पा सका है। रिवाजों के जीवततां व गहराई का अभाव है। एक मात्र उपन्यास 'कब तक पुकारू' है के सिवाय किसी भी रचना में विधवा-विवाह रीति का चित्रण नहीं हुआ है।

4. गैर आदिवासी द्वारा यौन शोषण:-

सामाजिक, आर्थिक,धार्मिक और सांस्कृतिक संक्रमण से गुजरती आदिवासी बस्तियों को पड़ोसी गैर आदिवासी हिन्दू ईसाई घर्म वाले साहूकारों, ठेकेदारों और सरकारी अधिकारियों के संपर्क ने आदिवासी औरतों को भोग, वासना पूर्ति का साघन न समझकर यौन शोषण की वस्तु बना दिया है। बाहरी लोगों के लिए आदिवासी औरत जिंस भ्रर है। गैर आदिवासी लोगों द्वारा किया गया यौन शोषण का अंकन उपन्यासों में हुआ है।

नदी के मोड़ पर में पुलिस जमादार की यौन कुण्ठा व हवस का शिकार भील औरत होती है। थानेदार के पास शिकायत लेकर जाते है तो उन पर बिना लाइंसेस के बन्दूक रखने, सिपाही पर हमला करने के आरोप लगाकर औरत को चरित्रहीन करार देते है। "यह अमली बड़ी खतरनाक औरत है हूजूर। दारू बनाती भी है, पीती भी है और पीलाती भी है।"[27] भीलों को ठगनेवाला जायसवाल की निगाह मैं बलात्कारी से अधिक आदिवासी औरत दोषी है। "तुम लोग साले इतने कम कपड़े पहनते हो कि विश्वामित्र की नीयत भी डोल जाये।"[28] गरीबी उसके लिए वासना जगानेवाली है। आदिवासी सोंचता है। "क्या औरत एक जिसके अलावा कुछ नहीं होती...हम आदिवासीयों की जिंदगानी का क्या मोल।"[29]

गरीबी से त्रस्त हताश व अपमानित आदिवासी की प्रतिक्रिया है "आदिवासी औरत को गाजर-मूली की तरह समझते है। रास्तों के किनारे खुली हवा में पड़े रहने पर भी उनके साथ बलात्कार होते है। ट्रक डाईवर और उनके साथ बैठनेवाले क्लीनर लोगों का कहना है कि उनके बदन पर रात के कपड़ा नहीं होता।"[30]

'सागर लहरे और मनुष्य' में रत्ना घाय की नौकरी करती है। "मालकिन का भाई व नौकर उस पर डोरे डालने में असफल होने पर रात में बलात्कार करने का प्रयास करते है। रत्ना के प्रतिरोध करने पर उसे नौकरी से हाथ धोना पड़ता है"।[31] अघेड़ वकील थी, रूवाला रत्ना को शादी के बहाने रूवाला रत्ना को शादी के बहाने से रखेल रखना चाहता है। "वह वस्त्राभूषण, होटल-पार्टी, शराब,गजरा-फूल के माघ्यम से कोर्ट शादी की तारीख को खिसकाता जाता है। वह शादी के बहाने रत्ना को यौन शोषण का साघन बनाना चाहता है"।[32]

'रथ के पहिये' और 'कब तक पुकारूं' में आदिवासी औंरते मालगुजार, साहूकारों व सिपाहीयों की मजबूरन रखैल बनकर पराधीन जीवन व्यतीत करती है। रखैल औरत की घुंटन, हताशा व संत्रास की अभिव्यकित रथ के पहिये में हुई है। मालगुजार की रखेल रंगली कहती है "अच्छा खाना और अच्छा पहनना ही सब कुछ नहीं है, वह सोंचती है, क्यों न मैं यह सब छोड़कर भाग जाऊं, लेकिन मालगुजार की कोठी का वैभव उसके हाथों में हथकड़ियां, पैरों में बेड़ियां डाले रखता। यह घर एक पिंजरे के समान था और उसके पंखों में उड़ने की शक्ति नहीं रह गई थी, पिंजरे की खुली खिड़की देखकर भी तो वह बाहर नहीं निकल सकती थी, वह पंख फड़-फड़ा कर रह जाती है।"[33] नर्व दिया माल गुजार की रखैल के नाम पर अघेड मुंशी की पत्नी बना दी जाती है। उसे अपना पूर्व जीवन याद आता है-"मैं एक बूढ़े के साथ क्यों ब्याही गई? उस समय उसे

https://www.gapbhasha.org/

अपना लाभ रोना याद आता, जिसका शरीर लाठी की तरह सीधा था और जिसकी आंखो यो चमक उठती जैसी एक ही क्षण में उसके मन का भाव जान लेंगी।"[34] पुलिस के आंतक पिटाई, चोरी के आरोप और जेल से डर से मुक्ति हेतु 'कब तक पुकारूं' की नट औरतें रखैल बनती है। प्यारी कहती है "अगर तुझे महलों में नहीं ले जा सकती तो अपने को बेंचकर तुझे हुकूमत दूंगी फिर तुझे पुलिस वाले डरा न सकेंगे। मुझे भी हर किसी की जूठन न खानी पड़ेगी, जो हम ब्याह बरातों में बंटोरते है।.. वह कहता था कि "तुझे जेल भिजवा देगा। पर मैं तुझे जेल नहीं जाने दूंगी। प्यारी को यौन रोग लग जाता है। वह अपने पति से बचना चाहती है"।[35] "चोरी के इल्जाम व अपमान से त्रस्त नट अपनी औरतों को पराये मर्दो सब से बचाने में असमर्थ व असफल सिद्घ होते है"।[36] जैसे "नटिनी होने का अर्थ ही कामुक्ता का भंडार होना आवश्यक था"।[37]

आदिवासी समुदायों का सभ्य समाज से संपर्क से उनके भोलेपन व सरल हदय का उनकी स्त्रियों की गरीबी व यौवन का मजाक उड़ाया गया। उनकी इज्जत आबरू सड़क पर नीलाम होने लगी, वे बाजार में बिकने वाली जिन्स होकर रह गई। गैर आदिवासी पुरूषों द्वारा स्त्रियों के शोषण का खुलासा उपन्यासों में हुआ है।

उपसंहार:-

आदिवासी उपन्यासों में स्त्री पुरूष के संबंध के साथ-साथ उनका जीवन किस तरह व्याप्त होता है। आदिवासी स्त्री अपनी रक्षा स्वयं कर सकती है उसे किसी की जरूर नहीं होती। स्त्रियों को सभी प्रकार की छूट दी जाती है अगर वो विधवा हो गई है तो उसका दूसरा विवाह करवा दिया जाता है। उसमें किसी कोर्ट कचहरी की आवश्यकता नहीं है, वहाँ की पंचायत ही इस काम में गाँव वालों का साथ देती है। सभी समाज की स्त्रियों को दुख, दर्द, यातना सबकुछ सहना पड़ता है, अगर वो उसे नहीं सहती तो उसे अलग बहुत से नाम दे दिये जाते है। उनके पुरूष हर कार्य में उनका साथ देते है। आदिवासी स्त्रियों का यौन शोषण सबसे ज्यादा होता है। उनका यौन शोषण बहुत से लोग करते है जैसे- पुलिस, हवलदार, ट्रकों के डाईवर, क्लीनर आदि लोग उनके साथ यौन शोषण करते है। अगर वह आवाज उठाती है तो उसे किसी न किसी मुसिबत में फ़सा दिया जाता है। उनके पति इस बात पर कुछ भी नहीं कर सकते, उन्हें अपनी दारू का खर्चा एवं अन्य खर्च के लिए पैसे वो ही लोग देते है। अगर किसी पुलिसवालें को या कोई ठेकेदार को उसकी लड़की पसंद आ जाये तो वो थोड़े से पैसे के लिए अपनी लड़की को उसके साथ भेंज देता है।

संदर्भ ग्रंथ सूचि

[1] भट्ट उदय शंकर, सागर लहरे और मनुष्य, पृष्ठ-125
[2] राघव रांगेय, कब तक पुकारूं, पृष्ठ-18
[3] वहीं -111
[4] सदन दामोदर, नदी के मोड़ पर, पृष्ठ-41
[5] हुसनैन नदीम, जनजातीय भारत, पृष्ठ-21
[6] जैन श्री चंद, वनवासी भील और उसकी संस्कृति, पृष्ठ- 230
[7] सदन दामोदर, नदी के मोड़ पर, पृष्ठ- 42
[8] वहीं - 42
[9] वहीं - 17
[10] वहीं - 32
[11] राघव रांगेय, कब तक पुकारूं, पृष्ठ- 56
[12] भट्ट उदय शंकर, सागर लहरे और मनुष्य, पृष्ठ- 32
[13] भट्ट उदय शंकर, सागर लहरे और मनुष्य, पृष्ठ- 66
[14] भट्ट उदय शंकर, सागर लहरे और मनुष्य, पृष्ठ- 60

https://www.gapbhasha.org/

[15] भट्ट उदय शंकर, सागर लहरे और मनुष्य, पृष्ठ- 78
[16] भट्ट उदय शंकर, सागर लहरे और मनुष्य, पृष्ठ- 170
[17] वहीं – 192
[18] वहीं – 200
[19] वहीं – 192
[20] अवस्थी राजेन्द्र, जंगल के फूल, पृष्ठ- 139
[21] वहीं – 42
[22] राघव रांगेय, कब तक पुकारूं, पृष्ठ- 67
[23] क्रुक खण्ड चार, उत्तर पश्चिम भारत के आदिवासी और जातियां, पृष्ठ-62
[24] सदन दामोदर, नदी के मोड़ पर, पृष्ठ- 90
[25] वहीं – 38
[26] वहीं – 46
[27] वहीं – 55
[28] वहीं – 19
[29] वहीं – 34-35
[30] भट्ट उदय शंकर, सागर लहरे और मनुष्य, पृष्ठ- 256
[31] वहीं – 280
[32] सत्यार्थी देवेन्द्र, रथ के पहियें, पृष्ठ- 231
[33] वहीं – 231-232
[34] राघव रांगेय, कब तक पुकारूं, पृष्ठ- 62
[35] वहीं – 22
[36] वहीं - 227

https://www.gapbhasha.org/